श्रीमद भगवद गीता ज्ञान दाता शिव-शंकर है
[श्लोकों और मुरलियों के महावाक्यों के अनुसार प्रमाण]

श्रीकृष्ण को गीता ज्ञान दाता माना जाता है ये एक अंधश्रद्धा की बात है; क्योंकि गीता के श्लोकों से ये बात साबित नहीं होती। गीता के श्लोकों के अनुसार श्री कृष्ण गीतापति भगवान् नहीं है। ये कृष्ण के अंध भक्तों ने गीता का भगवान् कृष्ण को बता दिया है जिसका कारण है– ब्रह्मकुमारियों ने दादा लेखराज ब्रह्मा को साकार गीता ज्ञान दाता बता दिया, जो की मुरलियों में आये महावाक्यों से साबित नहीं होते है। मुरलियों में स्पष्ट है कि गीता ज्ञान दाता दादा लेखराज ब्रह्मा उर्फ़ कृष्ण नही है। शिवलिंग जिसको वो निराकार शिव की यादगार मानती है; परन्तु शिवलिंग निराकार की नहीं, साकार {सम्पन्न स्वरुप} की यादगार है। निराकार तो बिंदी है। उनकी कोई मूर्ति नही बन सकती; पर वो निराकार साकार में आये तब मूर्तिमान कहा जा सकता है गीता का भगवान कृष्ण नहीं शिव है। (मु. 06.07.71 पृ.4 मध्यांत) ...क्या निराकार शिव ही सिर्फ गीतापति भगवान् हो सकते है ? दिखाया है अर्जुन के रथ में ज्ञान दिया है तो कोई स्थूल रथ की बात नहीं है। कठोपनिषद् 1.3.3.4 में बोला है– ***"आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव च। बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च। इन्द्रियाणि हयानाहुः"*** आत्मा को रथी समझ और शरीर को रथ समझ, बुद्धि को सारथी समझ और मन को लगाम समझ, इन्द्रियों को घोड़े समझ। वो निराकार गीता–ज्ञानदाता अर्जुन के साकार शरीर रूपी रथ में प्रवेश करता है।जिसको गीता में क्षेत्र भी कहा है– ***"इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रं इति अभिधीयते। एतत् यः वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः।।" 13/1*** क्षेत्र है अर्जुन की देह और उसका ज्ञाता है क्षेत्रज्ञ निराकार शिवज्योती ...इन दोनों का ज्ञान ही असली ज्ञान है निराकार शिव ज्योति को तो सभी मान सकते है; परन्तु साकार व्यक्तित्व को भूल जाते है जिसका परिणाम होता है कि भगवान् को सर्वव्यापी या तो सिर्फ निराकार ही समझ लेते है या दादा लेखराज ब्रह्मा को ही साकार रथ समझ लेते है; परन्तु उस साकार की पहचान ही निराकार देता है जो उसके सम्पूर्ण स्वरुप को धारण करता है। जैसे सूर्य की रौशनी का ज्ञान सूर्य देता है वैसे ही गीता–ज्ञान ही पहचान है असली ज्ञानदाता की ....निराकार साकार बिगर कोई भी कर्म नहीं कर सकते। पार्ट बजा नहीं सकते। (मु.ता. 01.09.71 पृ.1 आदि) ....जब कर्म नहीं कर सकते पार्ट नहीं बजा सकते तो ज्ञान कैसे दे सकते है ? फिर वो साकार कौन ? जिसके द्वारा गीता ज्ञान दिया गया जिसका प्रमाण दे रही है – स्वयं श्रीमद भगवत गीता और मुरलियां – क्योंकि सुप्रीम सोल के द्वारा दिया हुआ ज्ञान गीता ज्ञान है मुरलियां और मुरलियों में दिया हुआ ज्ञान ही श्रीमद्भग्वद गीता से मेल खाता है ।

एक तरफ कृष्ण का चित्र दूसरे तरफ शिव का। और पूछना हैं अब बताओ गीता का भगवान कौन? (मु.ता.04.01.1974 पृ.2 मध्य)

तथ्य	गीता का श्लोक	कृष्ण उर्फ़ दादा लेखराज ब्रह्मा	शिव–शंकर
गीता भगवानुवाच है कृष्ण उवाच नहीं और ना ही शिव निराकार कृष्ण के तन द्वारा गीता ज्ञान दाता है वो तो सिर्फ साकार मुकर्रर तन द्वारा है ।		गीता सुनाने वाला तो पुरुषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण चाहिए।कृष्ण की आत्मा तो हो न सके, न कृष्ण का शरीर हो सकता है। कृष्ण भगवानुवाच हो न सके।	शिव भगवानुवाच है न कि श्री कृष्ण भगवानुवाच। कृष्ण को भी श्री कहते है क्योंकि उनको भी श्रेष्ठ बनाने वाला बाप है। (सा.मु.ता. 1.03.03. पृ.1

		(मु. ता. 04.03.1969 पृ.1 आदि)	मध्यांत)
भगवान् को जन्म–मरण से न्यारा कहते है।	अजः अपि सन् अव्ययात्मा भूतानां ईश्वरः अपि सन्। (गीता 04/06)	कृष्ण का देवकी माता से जन्म लेते दिखाते है – कृष्ण के तो माँ–बाप थे ना। पतित–पावन है ही एक बापा। जिसको मा–बाप हैं वह पतित–पावन हो ना सके। उनको भगवान नहीं कह सकते। (मु.ता. 17.8.65 पृ.3 आदि)	महादेव के 108 नामों में एक नाम अ+ज है। महादेव का जन्म और मृत्यु नहीं दिखाते है–भगवान का कोई बाप नहीं। गॉडफादर का काई फादर हो नहीं सकता। (मु.ता. 17.8.65 पृ.3 आदि)....शंकर तो जन्म–मरण से न्यारा है। (मु.14.5.70 पृ.2 आदि)
भगवान् का ही सिर्फ दिव्य जन्म है जिसको कोई नहीं जानता, जबकि कृष्ण का तो सामान्य रूप से जन्म हुआ है। सभी जानते है	जन्म कर्म च मे दिव्यं। "न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः।" 10/2	कृष्ण की तिथि तारीख समय आदि सब कुछ देते है। (सा.मु.ता. 09.03.1967 पृ. 01 आदि)	शिवरात्रि कहा जाता है, कृष्ण रात्रि नहीं– बाप आते भी है रात्रि में। कब आते है उसकी तिथि तारीख कोई नहीं है। तिथि तारीख उनकी होती है जो लौकिक जन्म लेते है। यह तो है पार लौकिक बापा। इनका लौकिक जन्म नहीं है। .....इनका तो कहा ही जाता है दिव्य जन्मा। (सा.मु.ता. 09.03.1967 पृ.1 आदि)
कृष्ण का गर्भ से जन्म दिखाते है। सिर्फ एक महादेव है जिनको गर्भ से जन्म नहीं दिखाते है शिव की निराकारी स्टेज का सम्पूर्ण प्रैक्टिकल यादगार शंकर है जो निराकार नहीं; लेकिन निराकारी स्टेज धारण करने वाला है क्योंकि	प्रवेष्टुं च परन्तप। 11/54	कृष्ण का तो (मंदिरों में भी) वृद्ध तन नहीं है। (मु.ता. 27.7.88 पृ.2 मध्यांत)	आता हूँ बूढे तन में प्रवेष करता हूँ। तुम आत्मा छोटे बच्चे के शरीर में प्रवेश करती हो। मैं परमधाम से आता हूँ ,नीचे पार्ट बजानेामैं विकारी के गर्भ में नहीं आता हूँ। (सा.मु.ता. 11.5.01 पृ. 2 मध्य द्ध

निराकार शिव प्रवेश करते है शंकर में। कृष्ण का बूढ़े रूप में चित्र नहीं दिखाते शंकर को वृद्ध रूप में भी देखते है।			
महदब्रह्म अर्थात परमब्रह्मा में ज्ञान का बीज डालते है	"मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम्।" गी. 14/3	कृष्ण को परमब्रह्म शास्त्रों में नहीं लिखा है	शास्त्रों में शंकर को परमब्रह्म बताया
भगवान् को अकर्ता–अभोक्ता कहते है		कृष्ण को कर्म करते दिखाते है और जीवन के सभी सुखों को भोगते दिखाए है शास्त्रों में और दादा लेखराज ब्रह्मा बाबा को भी जीवन के सभी सुख का भोग करते दिखाया है	महादेव को चित्र और मूर्ति में बहुधा (अकर्ता&अभोक्ता) याद में बैठा दिखाते है
मुझ से ही सभी की उत्पत्ति होती है और मुझ में ही अंत में सब समां जाते है। (गीता)⟶	"सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्। कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्॥" 9/7	कृष्ण विष्णु के अवतार है उनकी उत्पत्ति महादेव के लिंग से हुई है(जो कृष्ण स्वयम रचना है वो किसी की उत्पत्ति नहीं कर सकता है और कृष्ण उर्फ ब्रह्मा साकार शरीर से भी मौजूद नहीं है जो उनमें सभी प्राणी समा सके) क्रियेटर ब्रह्मा को नहीं कहा जाता। (मु.ता.13.02.1975 पृ.2 मध्य) ब्रह्मा भी रचना है शिवबाबा की। (मु.ता.26.06.1970 पृ.1 आदि)	शास्त्रों में दिखाया है लिंग ही सृष्टि के आदि में था जिससे ही सबकी उत्पत्ति हुई है और झाड़ के चित्र में शंकर को ही दिखाया है जिससे (के) द्वारा सभी आत्माएं परमधाम जा रही है (ब्रह्मा के द्वारा नहीं)।
मेरी अव्यक्त मूर्ति (शंकर) से ये सारा संसार विस्तार को पाया है (गीता)	मया ततं इदं सर्वं जगत् अव्यक्तमूर्तिना। 9/4	कृष्ण की कोई भी मूर्ति या चित्र क्राइस्टादि धर्मपिताओं जैसा अव्यक्त रूप में नही दिखाया है ना दादा लेखराज ब्रह्मा की कोई चित्र (फोटो) निरकारी स्टेज का है	शंकर के 108 नामों में एक नाम अव्यक्त है शिवलिंग ही ऐसी इन्द्रिय हीन निराकारी मूर्ति है जो मूर्ति भी है अर्थात साकार होते हुए भी मन–बुद्धि से निराकारी स्टेज की यादगार है इसलिए शंकर

		कृष्ण की कोई मूर्ति, चित्र या अव्यक्त नाम होने की कोई यादगार नहीं है	के सभी चित्र निराकारी स्टेज के दिखाते है
चरित्र के अनुसार ही चित्र बने है		कृष्ण कोई योगेश्वर नहीं है उनका कोई चित्र याद की स्टेज का नहीं है .... कृष्ण को भी योगेश्वर कह देते हैं पर कृष्ण योगेश्वर है ही नहीं। (मु. 05.07.1965) कृष्ण को योगेश्वर नहीं कहा जाता है। (मु. 31.07.1969 पृ.3 आदि)	योगेश्वेर एक महादेव है जिनकी यादगार चित्र और मंदिर भी है जिनको योगी ही नहीं आदियोगी भी कहते है .. बाप को योगेश्वर कहा जाता है। (रात्रि साकार मु. 03.06.1965)
जिस (अव्यक्तमूर्ति महादेव) से ये सारा संसार विस्तार को पाया है उसको अविनाशी जान	"अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् । विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥" 2/17	दादा लेखराज ब्रह्मा अभी साकार शरीर से मौजूद (व्यक्त) नहीं है और शास्त्रों में कृष्ण की भी मृत्यु दिखाई है ।	महादेव को मृत्युंजय दिखाया है और अकालमूर्त दिखाते है –अकालमूर्त का यह रथ अथवा तख्त खास मुकर्रर है। (मु.ता. 27.07.88 पृ.2 आदि) अकालमूर्त का बोलता–चलता तख़्त है। (मु.ता. 21.07.69 पृ.1 मध्य) ज़रूर चैतन्य है।
साधारण तन में भगवान् आते है इसलिए ना पहचान ने के कारण अवज्ञा करते है (गीता) ।	"अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।"9/11 (गीता) ।	कृष्ण को गरीब नहीं दिखाते है ना ही दादा लेखराज ब्रह्मा को गरीब कहेंगे "ब्रह्मा बाबा का तो बड़े–बड़े राजाओं के साथ उठना–बैठना होता था, इंग्लैंड की महारानी एलिज़ाबेथ भी उनसे रत्न लेती थीं" (किताब–थ्री इन वन से) मैं कृष्ण (उर्फ़ ब्रह्मा) के (शोभायमान) तन में नहीं आता हूँ। (मु.ता. 13.08.1976 पृ.3 अंत)	शंकर को फ़कीरी वेश में दिखाते है – (शिव सदाज्योति) गरीब निवाज़ है ना! (मु.ता. 28.6.70 पृ.2 अंत) बाप कहते हैं– देखो, भक्तिमार्ग में मुझ शिव को रहने के लिए कितने अच्छे–2 महल बनाते हैं हीरो–जवाहिरातों के और अभी मैं डायरैक्ट आया हूँ तो देखो कहाँ रहता हूँ। कम–से–कम राष्ट्रपति जैसा मकान तो होना

			चाहिए; परन्तु देखो तीन पैर पृथ्वी भी नहीं मिलती। (मु.ता. 01.05.1973 पृ.1 मध्य) मैं बिल्कुल साधारण तन में आता हूँ। (मु.ता. 13.08.1976 पृ.3 अंत)
	त्वं आदिदेवः पुरुषः पुराणः त्वं अस्य विश्वस्य परं निधानं। वेत्ता असि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वं अनन्तरूप।।11/38	कृष्ण को आदिदेव नहीं कहते है कृष्ण जो विष्णु के अवतार है विष्णु की उत्पत्ति ही महादेव के लिंग से होती है तो उनको तो आदिदेव नहीं कह सकते है उन (कृष्ण) का अंतिम जन्म लेखराज है। वह तो प्रजापिता बन नहीं सकता। (मु.ता. 21.08.1973 पृ.5 मध्यांत)	प्रजापिता आदिदेव कहते हैं; परंतु आदिदेव का अर्थ नहीं समझते हैं। ... आदि अर्थात् शुरूआत का। (मु.ता. 04.09.1972 पृ.02 आदि) जिस आदि पुरुष को हिन्दुओं में 'आदिदेव', मुसलमानों में 'आदम', जैनियों में 'आदिनाथ' क्रिश्चियन्स में 'एडम' कहा जाता है।
	"त्वमेव माता च पिता त्वमेव...." पिता अहं अस्य जगतो माता 09/17	कृष्ण को माता-पिता नहीं कहा जाता है	त्वमेव माता च पिता त्वमेव...शिव के मंदिर में जाकर ही कहते है इसलिए शंकर की ही सिर्फ अर्धनारेश्वर मात-पिता के रूप में भी यादगार दिखाते है
गीता ज्ञान व्यास के द्वारा मिला है वो कोई ब्रह्मा बाबा नहीं है उनके द्वारा मुरलियों को पढ़ा गया पर व्याख्या नहीं हुई सिर्फ ज्ञान बना पर अमृत नहीं गीता ज्ञान को तो अमृत कहा जाता है	"व्यासप्रसादात्" 18/75	कृष्ण; उर्फ़ ब्रह्माद्ध भगवान हो न सके। (मु.ता. 14.11.71 गीता को ज्ञानामृत कहना भी राँग है। भल बाबा ने इतने दिन नहीं कहा। (मु.ता. 6.3.67 पृ.2 मध्यादि)	व्यास को भगवान कहते हैं। (साकार मु. 03.06.1965) व्यास कहा जाता है कथा वाचक को जो मुरली चलाते हैं। मु.04.11.1965 पृ.1 अंत शंकर ने पार्वती को अमरकथा सुनाई। क्या वह शंकर पार्वती दूसरी थी। अब वास्तव में है कुछ भी नहीं। तुम सब

			पार्वतीयां हो। अमरकथा तुमको सुना रहे हैं। मु. 09.05.1970 अंत पार+वती =सबको पार लगाने वाली
विनाश करना शंकर का ही काम है कृष्ण महाविनाश नहीं कर सकते है।	यस्य न अहङ्कृतो भावो बुद्धिः यस्य न लिप्यते। हत्वा अपि स इमान् लोकान् न हन्ति न निबध्यते।। (18/17 गीता)	विनाश कराना यह कोई कृष्ण का काम नहीं हैं। (मु.ता. 12.04.1972 पृ.2 अंत)	बाप विनाश उनसे कराते हैं, जिस पर (याद की पावर से) कोई पाप न लगे। (मु.ता.29.04.1970 पृ.1 मध्य)
	श्रीभगवानुवाचः – 'कालोऽस्मि' अर्थात् मैं काल हूँ। 11/32	जो स्वयं अपने काल से मुक्त नहीं हो सकता वो दुसरो केलिए काल नहीं बन सकता है। कृष्ण को महाकाल या काल भी नहीं कहा है। उनकी तो पाँव में तीर लगने से मृत्यु हुई।	सिर्फ महादेव को ही महाकाल कहा जाता है यादगार मंदिर महाकालेश्वर भी हैं।
ईश्वर ही सबका भरण– पोषण करता है और सर्व सम्बन्धी है और सारी दुनियाँ का बीजरूप बाप (लिंगमूर्ति) भी है।	गतिः भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत्। प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजं अव्ययं।। 9/18	कृष्ण सबके भरण–पोषण और विनाश कर्ता नहीं हो सकते है।	स्थापना,पालना,विनाश का कार्य सिर्फ साकारी सो निराकारी स्टेज वाले महादेव के द्वारा ही हो सकता है
गीता में 3 गुण से परे जाने का ज्ञान है जबकि वेद तीन गुण वाले है रजोगुण उत्पन्न ही द्वापुर से होता है इसलिए गीता वेदों से भी पहले है। वही सारे वेद–शास्त्र, बाइबल,कुरान आदि की भी आदि माई–बाप है। सभी धर्म के लोग गीता का लोहा मानते हैं क्योंकि सभी धर्मशास्त्रों का सार गीता में है।	त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन। निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्।। 2/45 'गुणतीत–कल्याण कल्पान्तकारी' शंकर केलिए ही कहा गया है।	कृष्ण उर्फ़ ब्रह्मा या विष्णु को उत्पत्ति और पालना करते दिखाया है उत्पत्ति रजोगुण से होती है और कृष्ण के चरित्र से कामना उत्पन्न होती है इसलिए रजोगुण के बाद ही तामसगुण अवश्य आता है इसलिए 3 गुणों से परे जाने का ज्ञान कृष्ण नहीं दे सकते है जो स्वयम गुणों से परे ना हो।	महादेव को सदा आसक्ति से परे अनासक्त दिखाया है जो 3 गुणों से परे है

	जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदं। 3/43 महाशनो महापाप्मा विद्धि एनम् इह वैरिणं।3/37	कृष्ण ने काम पर जीत नहीं पायी उन्होंने काम अंत नहीं किया और ही काम को जन्म दिया अर्थात कामना को बढाया है ।	महादेव को ही कामदेव को भस्म करते दिखाते है जिसने स्वयम के कामविकार को भस्म किया हो वो ही काम–महाशत्रु का ज्ञान दे सकता है।

श्रीमद भगवद गीता में भगवान् के स्वरुपका वर्णन बताया है। उन श्लोकों में आये नामों से सिर्फ महाकाल रूप महादेव के ही मंदिर है कृष्ण के तो सभी यादगार मंदिर छोटे बच्चे का मूर्ति रूप हैं । वह कैसे महाकाल विकराल रूप हुआ ?

Virateshwar Temple
Sohagpur, shahdol, M.P.

विराटश्च - Viraatashca
Adhyaay-1
Shloka-4

Panchamukh Shivling Temple
Sambalhedda village, Muzaffarnagar dist. (UP)

विश्वतोमुखं-Vishwatomukham
Adhyaay-09
Shloka-15

Agniswarar temple
Kanjanur,Tamilnadu

अहं अग्निः - Aham agnih
Adhyaay-09
Shloka-16

Vaitheeswaran Temple
Tamilnadu

अहं औषधं - Aham aushadham
Adhyaay-09
Shloka-16

Jagadishwar temple
Raigad fort, Maharashtra

जगतः - Jagatah
Adhyaay-09
Shloka-17

Baba Baidyanath Dham
Jharkhand

अहं औषधं - Aham aushadham
Adhyaay-09
Shloka-16

Omkareshwar Temple
Shivapuri, Khandwa, Madhya Pradesh

ओंकारः - Omkaarah
Adhyaay-09
Shloka-17

Arthanareeswarar temple
Tiruchengode, Tamilnadu

पिता, माता - Pita, mata
Adhyaay-09
Shloka-17

Perur pateeswarar Temple
Coimbatore, Tamilnadu

भर्ता: - Bhartaa (pati)
Adhyaay-09
Shloka-18

Pavithreswaram Srimahadev temple
Kottarakkara taluk of Kollam district in the state of Kerala, India

पवित्रं - Pavitram
Adhyaay-09
Shloka-17

Amarnath Temple
Jammu and Kashmir

अमृतं - Amrutam
Adhyaay-09
Shloka-19

Dharmeshwar MahadevTemple
Himachal Pradesh

धाता - Dhaataa
Adhyaay-(9, Shloka17); (10, Shloka29); (11, Shloka39)

Brahmeswara Temple

Bhubaneswar, Odisha, India

ब्रह्म - Brahm
Adhyaay-10
Shloka-12

Sri sarneswarji mahadev temple

Sirohi district in Rajasthan

शरणं - Sharanam
Adhyaay-09
Shloka-18

Bhuteshwar Temple

Kurukshetra, Haryana

भूतभावन,भूतेश-Bhuutabhaavan, Bhuutesha
Adhyaay-10
Shloka-15

Suryeswara Temple

Vorkkati,Kerala

तपा-Tapaa
Adhyaay-09
Shloka-19

Sri Sri Devadidev Temple

Hill Colony Kulti

देवदेव-Devdev
Adhyaay-10
Shloka-15

Amrutheshwara Temple

Amruthapura, Chikmagalur, Karnataka

अमृतं - Amrutam
Adhyaay-09
Shloka-19

Somnath Mahadev Temple

Gujarata

शशी-Shashi
Adhyaay-10
Shloka-21

Ravishwarar Temple

Chennai,Tamil Nadu

रवि:-Ravih
Adhyaay-10
Shloka-21

Adeshwar Mahadev Temple

Ichangu Nagarjun Municipility Kathmandu Nepal

आदिदेव-Adidev
Adhyaay-10
Shloka-12,32

Sri Kapileswara Swamy Temple

Tirupati District of Andhra Pradesh

कपिलो मुनि:-Kapilo munih
Adhyaay-10
Shloka-26

Siva Vishnu Temple

Lanham, Maryland, right outside of Washington D.C.

विष्णु:-Vishnuh
Adhyaay-10
Shloka-21

Vibhuthi nath temple

Shravasti, Uttar Pradesh, India

विभुतिभि:-Vibhuutibhih
Adhyaay-10
Shloka-16

Rameswaram Temple

Tamilnadu

रामः - Raamah
Adhyaay-10
Shloka-31

Gangeshwar Mahadev Temple

Fudam Village, Diu, Daman and Diu, India

जाह्नवी-Jaanhavi
Adhyaay-10
Shloka-31

Maneswar Temple

Sambalpur, Western Odisha

मनः - Manah
Adhyaay-10
Shloka-22

Sagareshwar Shiva Temple

Sindhudurg

सागर - Sagar
Adhyaay-10
Shloka-24

Anantheshwara Temple

Udupi district of Karnataka

अनंतः - Anantah
Adhyaay-10
Shloka-29

Dandeeswaram temple

Chennai

द्वंद्वः - Dvandvah
Adhyaay-10
Shloka-33

Rudreswara Swamy Temple

Hanamakonda, Telangana State, India

रुद्राणां - Rudraanaam
Adhyaay-10
Shloka-23

Mahakaleswara temple (jyothirling)

Ujjain in the state of Madhya Pradesh

कालः - Kaalah
Adhyaay-10
Shloka-30

Kubereshwar Mahadev Temple

Manjalpur, Vadodara, Gujarat

वित्तेश-Vittesha
Adhyaay-10
Shloka-23

Kubereshwar Mahadev Temple

Sehore in the city Naplakhedi M.P.

वित्तेश-Vittesha
Adhyaay-10
Shloka-23

Sarpeswara Temple

Balarampur, Athagarh, Cuttack

सर्पानाम -Sarpaanaam
Adhyaay-10
Shloka-28

Sukreswar Temple

Assam in India

उशना कविः-Ushanaa kavih
Adhyaay-10
Shloka-37

Shri Tejeshwar Mahadev

Tamil Nadu

तेज-Tejah
Adhyaay-10
Shloka-36

Vyasheswar Mahadev

Dena Village, Vadodara, Gujarat

व्यास -Vyaas
Adhyaay-10
Shloka-37

Arjuneswarar temple

Kadathur, Tamil Nadu

धनञ्जय-Dhananjaya
Adhyaay-10
Shloka-37

Gopeswar Mahadev temple

Vrundhavan,UP and at Garhwal, Uttarakhand.

गुह्यानाम-Guhyaanaam
Adhyaay-10
Shloka-38

Yogeswar temple

Patora dam, Nuapada District.Odisha

योगेश्वर-Yogeshwar
Adhyaay-11
Shloka-04,08

Nageswar mahadev temple

Dwarka,Gujarat

नागानां-Naagaanaam
Adhyaay-10
Shloka-29

Kamelshwar temple

Srinagar town in the Pauri Garhwal region which is located in Uttarakhand

कमलपत्राक्ष-Kamalapatraaksha
Adhyaay-11
Shloka-02

सिर्फ इतने ही नहीं और भी ढेरों श्लोको और यादगार रूप में प्रमाण मौजूद है कि गीता ज्ञान दाता शिव–शंकर भोलेनाथ ही है आप खुद श्लोको के आधार पर रिसर्च करके देखिए और गीता ज्ञान को श्रीकृष्ण के चरित्र से मिलाप करके दिखिए तो प्रमाण स्वयम सामने आएगा फिर भी अंध श्रद्धा और परम्परा से चली आ रही मान्यता के कारण कृष्ण को ही गीता ज्ञान दाता मानते है क्योंकि अगर 1 झूठ को 100 बार बोला जाये तो वो झूठ भी सत्य जैसा लगने लगता है पर सत्य लग सकता सत्य हो नहीं सकता । उस असत्य का विनाश निश्चित है क्योंकि गीता में कहा – नसतो विद्यतो भावो ..

ब्रह्माकुमारियाँ जिन दादा लेखराज ब्रह्मा को साकार गीता ज्ञान दाता भगवान मानती है जबकि मुरलियों में ढेरों स्पष्ट प्रमाण है कि कृष्ण उर्फ़ दादा लेखराज ब्रह्मा गीता ज्ञान दाता नहीं –

ब्रह्मा ही फिर (सतयुगादि में) कृष्ण बनता है। (मु.ता. 3.3.73 पृ.1 मध्यांत) यह दादा भी राजयोग सीख रहे हैं और कृष्ण बनने वाले हैं। (रात्रि मु.ता. 23.1.67 पृ.1 अंत)	शंकर न होता तो हम (शिवबाबा को)शंकर के साथ मिलाते भी नहीं। चित्र बनाया है तो मुझे भी शंकर साथ मिला दिया है। शिव–शंकर महादेव कह देते तो (त्रिमूर्ति में) महादेव बड़ा हो जाता। (मु.ता. 26.6.70 पृ.2 अंत) शिव के मन्दिर में जाकर देखो वहाँ लिंग रखा है। ज़रूर चैतन्य था तब तो पूजा होती है। (मु.ता. 27.6.71 पृ.2 आदि) शंकर को भी अपना शरीर है।" (मु.ता.14.4.71 पृ.1 मध्य)
कृष्ण को रुद्र नहीं कहेंगे। (मु.ता. 19.6.92 पृ.1 अंत)	भगवान को रुद्र भी कहा जाता है।(मु.ता. 19.6.92 पृ.1 अंत)...जो पहले राम अथवा रुद्र बाबा के गले का हार बना होगा फिर विष्णु के गले का हार बनेगा। (मु.ता. 03.08.72 पृ.3 मध्य)
कृष्ण को ज्ञान सागर नहीं कह सकते। (मु.ता. 25.8.65 पृ.3 आदि)	रूद्र है ज्ञान सागर। (मु. 8.3.73)
कृष्ण को ज्ञान का अगाध सागर पतित–पावन तो कहते नहीं। (मु.ता. 7.9.63 पृ.2 आदि)	ज्ञानसागर शिव बाबा को कहा जाता है। (मु.ता. 21.7.71 पृ.2 अंत)
भगवानुवाच श्रीकृष्ण तो नहीं पढ़ाते। ज्ञान का सागर कृष्ण थोड़े है। (मु.ता. 12.2.72 पृ.2 मध्य)	ज्ञान के सागर अथवा हे ज्ञान सूर्य बाबाए भगवान को बाबा कहा जाता है ना। (मु. 13.4.71) राम शिवबाबा को कहा जाता है (मु.ता.7.9.68 पृ.3 मध्यादि) शिवबाबा आते भी ज़रूर हैं परन्तु उनके बदली कृष्ण को गीता का भगवान कह दिया है। मु. 14.7.71 पृ.1 आदि)
कृष्ण तो पतित–पावन हो न सके। (मु.ता. 3.9.70)	भगवान एक ही ज्ञान सागर पतित–पावन है। (मु.ता. 3.9.70)
कृष्ण भगवान है ही नहीं। (मु. 13.11.1968 पृ.3 मध्यांत)	राम भगवान को कहा जाता है। (मु.ता. 8.6.74 पृ.1 अंत)

यह ईश्वर बाप बैठ पढ़ाते हैं। कृष्ण को ईश्वर थोड़े ही कहेंगे। यह भी भूल है। (मु.ता.18.9.68 पृ.3 अंत)	राम अर्थात् ईश्वर (मु. 02.09.1969 पृ.2 आदि)
कृष्ण को सर्वशक्तिवान नहीं कहा जाता। (मु.ता. 11.11.72)	सर्वशक्तिवान तो एक बाप ही है जिसको राम भी कहते हैं। (मु.ता. 20.2. 74 पृ.3 आदि)
कृष्ण तो बच्चा (बुद्धि) है। (रात्रि मु.ता. 11ण्3ण्68 पृ.1 आदि)	राम कहा जाता है बाप को। (मु.ता. 6ण्9ण्70ए पृ.3 मध्य)
अगर कहे कृष्ण भगवानुवाच हैय परन्तु वह तो है सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स। वह राजयोग कैसे और किसको सिखावेगा। गीता सुनाने वाला तो पुरुषोत्तम संगमयुगी चाहिए। (मु. ता. 04.03.69 पृ.1 आदि)	**राजयोग है। ब्रह्मा वा कृष्ण नहीं पढ़ाते हैं। वह तो परमपिता परमात्मा पढ़ाते है। पतित पावन वह बाप है। (मु.ता. 12ण्2ण्72 पृ.2 आदि)** **गीता तो परमपिता परमात्मा ने सुनाई। (मु.ता. 15ण्11ण्72द्ध**
भगवानुवाच। कृष्ण तो हो न सके। असम्भव है। जो कृष्ण आकर राजयोग सिखलावे। (मु.ता. 27.6.72)	5000 वर्ष पहले भी बाप ने यह समझाया था अभी भी समझाते है। श्रीकृष्ण यह बातें समझा नहीं सकते। उनको बाप भी नहीं कहेंगे। (मु.ता. 27.9.90) शंकर भी एवर पूज्य है। वह कब पुजारी बनते नहीं। (मु.ता. 28.8.71)
गीता है सर्व शास्त्रमयी शिरोमणि। बाप के मुख से निकली माता। माता से निकला कृष्ण बच्चा। अगर उसी कृष्ण को माता का पिता बना दे, तो यह कितनी मूर्खता है। (मु. ता. 5.1.73 पृ.2 मध्य)	गीता माता से भगवान ने राजयोग सिखलाया। कृष्ण की आत्मा अगले जन्म में राजयोग सीख कृष्ण बने। तुम अभी गीता से पैदा हो रहे हो ना। माता है ना। गीता का पति है शिवबाबा। (मु. ता. 05.01.1973 पृ. 2 मध्य)
कोई भी शास्त्रों में नहीं है। श्रीकृष्ण भगवानुवाच तो लिख दिया है। परन्तु न कृष्ण की गीता है न उनका भागवत है। (सा.मु.ता. 24.2.87 पृ 3 मध्य) श्रीकृष्ण है स्वर्ग का पहला राजकुमार। यह बेहद का बाप इनको राज्य भाग्य देते है। बाप जो नई दुनिया स्वर्ग स्थापन करते हैं उसमें श्रीकृष्ण नंम्बर वन प्रिन्स है। (सा.मु ता.14.10.84 पृ.2 आदि)	**गीता का भगवान कृष्ण नहींए षिव है। शिवबाबा रचयिता है और कृष्ण है रचना। स्वर्ग का वर्सा देने वाला स्वर्ग का रचयिता ही हो सकता है।** (3.5.91 8.5.01 पृ.1)
निराकार परमात्मा सभी धर्मवालों का पिता है। कृष्ण को सभी नहीं मानेंगे। (मु.ता. 16.5.98 पृ.1आदि)	
कन्याओं का कन्हैया बाप तो मशहूर है। कृष्ण कोई कन्याओं का बाप नहीं है। (सा.मु.ता.19.3.87 पृ.1 मध्य)	
कृष्ण को लार्ड कृष्ण भी कहते है। भगवान को कभी लार्ड नहीं कहेंगे। उनको गॉडफादर ही कहते है। (सा.मु. ता. 28.01.99 पृ.2 आदि)	शंकर ही अपन को गॉड फादर कह सकते (मु.ता.11.05.71 पृ.1 अंत)
यह हिस्ट्री जाग्रफी का राज गीता का भगवान बैठ स्मझाते है। भगवान की महिमा अलग, कृष्ण की महिमा अलग है। कृष्ण को मनुष्य सृष्टि का बीजरुप वर्ल्ड आलमाईटी अथार्टी नहीं कहेंगे। वर्ल्ड आलमाईटी आथारिटी एक है। सूर्यवंषी की महिमा अलग है चन्द्रवंशी की महिमा अलग है। (सा.मु. ता. 20.03.03 पृ.3 मध्य)	
परन्तु उस साकार पार्ट धारी के महत्व को छुपा दिया है इसलिए मुरली में बोला है –बाप की लाश गुम क़र दी है "त्रिमूर्ति भी दिखाते हैं। सिर्फ़ शिव को उड़ा दिया है उनका विनाश कर दिया है। ठिक्कर-भित्तर में ठोक, उनका लाश गुम कर दिया है। (मु.ता.10.9.73 पृ.1 मध्य)	

गीता ज्ञान दाता सदा पूज्य महादेव ही है ना कि पुजारी कृष्ण जो सिर्फ बच्चे के रूप में दिखाए जाते है

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025